विश्व भोजपुरी सम्मेलन

विश्व भोजपुरी सम्मेलन

विश्व भोजपुरी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक, भोजपुरी अस्मिता पर्व

दिनांक : 6 अप्रैल, 2025

एयरपोर्ट्र्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया, अधिकारी संस्थान, नई दिल्ली

विश्व भोजपुरी सम्मेलन राष्ट्रीय सचिवालय

संरक्षक

सतीश त्रिपाठी   डॉ. अरुणेश नीरन

राष्ट्रीय अध्यक्ष

अजीत दुबे

राष्ट्रीय महासचिव

डॉ. अशोक कुमार सिंह

उपाध्यक्ष

डॉ. अशोक द्विवेदी (बलिया), जयप्रकाश सिंह (Add. DGP, हि.प्र.–छपरा), प्रो. संजीव तिवारी (दिल्ली), प्रो. गुरु चरण सिंह (सासाराम), सुश्री प्रेमशील शुक्ल (देवरिया)

सचिव मंडल

जगदीश नारायण उपाध्याय (कार्यालय), देवेन्द्र नाथ तिवारी (संगठन), केशव मोहन पांडेय (संगठन), सहरयार खान (आयोजन) भरत चतुर्वेदी, मुन्ना पाठक (सूचना/प्रसार)

राष्ट्रीय समन्वयक : डॉ. अपूर्व नारायण तिवारी

अंतरराष्ट्रीय समन्वयक : दिलीप गिरि

राष्ट्रीय अध्यक्ष (आर्थिक प्रकोष्ठ) : पंकज जायसवाल

राष्ट्रीय अध्यक्ष (युवा मामले) : अजीत सिंह

शोध एवं संवर्द्धन समिति : देवकान्त पाण्डेय, जलज मिश्रा

	अध्यक्ष	**महासचिव**
उत्तर प्रदेश इकाई :	सिद्धार्थमणि त्रिपाठी	डॉ. शैलेंद्र कुमार राव
गाजियाबाद इकाई :	मनोज तिवारी	जे.पी. द्विवेदी
बिहार इकाई :	प्रो. डॉ. के.सी. सिन्हा (पूर्व कुलपति)	चंद्रभूषण राय
झारखंड इकाई :	अनिरुद्ध त्रिपाठी अशेष	प्रदीप कुमार
उत्तराखंड इकाई :	राजेश शुक्ला (पूर्व एम.एल.ए.)	बी.के. दुबे
मध्य प्रदेश इकाई :	आर.के. यादव	कुँवर प्रसाद
महाराष्ट्र इकाई :	पंकज गांधी जायसवाल	जनार्दन यादव
छत्तीसगढ़ इकाई :	शशि सिंह	
पश्चिम बंगाल इकाई :	विनय बिहारी सिंह	
असम	प्रो. माधवेंद्र पाण्डेय	
त्रिपुरा इकाई :	प्रो. विनोद मिश्र	डॉ. आलोक पाण्डेय
दिल्ली इकाई :	विनयमणि त्रिपाठी	डॉ. मनीष कुमार चौधरी

कार्यकारिणी सदस्य

उत्तर प्रदेश : संजय सिंह, डॉ. आनन्द प्रकाश तिवारी, आचार्य डॉ. जनार्दन पाण्डेय, कप्तान उपाध्याय

महाराष्ट्र : गोपीनाथ तिवारी, गोपाल पाण्डेय, वसंत साव

नई दिल्ली : अरविन्द दुबे, प्रदीप पाण्डेय, रामनाथ राय, लल्लन तिवारी, मोरध्वज राय, घनश्याम सिंह, ऋषि मिश्रा

बिहार : डॉ. वाल्मीकि राम, डॉ. प्रियंका कुमारी

पश्चिम बंगाल : अनिल ओझा नीरद

पंजीकृत पता : न्यू कॉलोनी, जलकल कॉम्प्लेक्स, देवरिया 274001

दिल्ली कार्यालय : 48 वैशाली, डाबड़ी, पालम मार्ग, नई दिल्ली - 110045

मोबा. : +91-981112-4368; E-mail : ajitdubey@rediffmail.com

वाराणसी कार्यालय : सिंह मेडिकल एंड रिसर्च सेंटर, एस. 14/84 जी, मलदहिया, वाराणसी, उत्तर प्रदेश,

फोन : +91-9415225143

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु
राष्ट्रपति, भारत गणतंत्र

अजय कुमार सिंह
राष्ट्रपति के प्रेस सचिव
Ajay Kumar Singh
Press Secretary to the President

राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली -110004
Rashtrapati Bhavan
New Delhi -110004

संदेश

भारत की राष्ट्रपति, श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि विश्व भोजपुरी सम्मेलन 6 अप्रैल 2025 को नई दिल्ली में अपने 18वें राष्ट्रीय अधिवेशन - 'भोजपुरी अस्मिता पर्व: 2025' का आयोजन कर रहा है।

राष्ट्रपति जी, विश्व भोजपुरी सम्मेलन की भोजपुरी भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में योगदान के लिए सराहना करती हैं तथा इस अधिवेशन के सफल आयोजन की कामना करती हैं।

अजय सिंह
राष्ट्रपति के प्रेस सचिव

नई दिल्ली
अप्रैल 03, 2025

Tel. : +91-11-23016535 (Direct), 23015321 Extn. 4322, Fax 23794498, E-mail-press.secy@rb.nic.in

Shiv Pratap Shukla
Governor
Himachal Pradesh

शिव प्रताप शुक्ल
राज्यपाल
हिमाचल प्रदेश

सत्यमेव जयते

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि विश्व भोजपुरी सम्मेलन अपना 18वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन – 'भोजपुरी अस्मिता पर्व : 2025' आगामी 06 अप्रैल, 2025 को नई दिल्ली में आयोजित कर रहा है। यह आयोजन भोजपुरी भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए समर्पित एक महत्वपूर्ण पहल है।

भोजपुरी भाषा केवल एक संप्रेषण माध्यम ही नहीं, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और लोकमंगल की भावना का प्रतीक भी है। यह भाषा लोकगीतों, कथा–कहानियों और अपनी मिठास के माध्यम से भारत ही नहीं, बल्कि विश्वभर में लोगों को जोड़ने का कार्य कर रही है। इस गौरवशाली परंपरा को सहेजने और नई पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं।

मुझे विश्वास है कि यह अधिवेशन भोजपुरी भाषा और संस्कृति को नई दिशा प्रदान करेगा तथा इसके संरक्षण और प्रचार–प्रसार में अहम भूमिका निभाएगा। मैं इस आयोजन की सफलता की मंगलकामना करता हूँ और सभी प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(शिव प्रताप शुक्ल)

राज भवन, शिमला–171 002
Raj Bhawan, Shimla-171002
0177-2624840, 2624451
0177-2624440, 2624152
governorsecy-hp@nic.in

दयाशंकर सिंह
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
परिवहन विभाग

राज्यमंत्री (स्व०प्र०) उत्तर प्रदेश

संख्याः 122(बी)/वी.आई.पी./रा.मं.(स्व.प्र.)परि./2025
कक्ष सं.- 63A - 63C, विधान भवन, लखनऊ
दूरभाष सं. : 0522-2238071, 2213259

दिनांक : 03-04-2025

शुभकामना संदेश

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि विश्व भोजपुरी सम्मेलन आगामी 06 अप्रैल, 2025 को नई दिल्ली में अपने 18वें राष्ट्रीय अधिवेशन–'भोजपुरी अस्मिता पर्व :2025'–का आयोजन कर रहा है। यह आयोजन भोजपुरी भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा। पिछले तीन दशकों से विश्व भोजपुरी सम्मेलन ने जिस समर्पण और निष्ठा के साथ इस समृद्ध विरासत को आगे बढ़ाया है, वह प्रशंसनीय और प्रेरणादायी है।

भोजपुरी हमारी सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग है, जो अपनी मधुरता, सहजता और जीवन के विविध रंगों को समेटे हुए है। यह भाषा और संस्कृति न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक मंच पर भी अपनी विशिष्ट छाप छोड़ रही है। विश्व भोजपुरी सम्मेलन ने डेनमार्क, मॉरीशस से लेकर देश के विभिन्न शहरों में आयोजित अपने सम्मेलनों के माध्यम से इस गौरवशाली परंपरा को एक नई ऊँचाई प्रदान की है। यह आयोजन भोजपुरी समाज को एकजुट करने और इसकी अस्मिता को सशक्त करने का एक अनुपम अवसर है।

मैं इस अवसर पर सभी आयोजकों, सहभागियों और भोजपुरी प्रेमियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मेरा विश्वास है कि यह अधिवेशन भोजपुरी संस्कृति के गौरव को और अधिक बढ़ायेगा तथा भावी पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

मेरी कामना है कि यह आयोजन सफलता पूर्वक संपन्न हो और भोजपुरी अस्मिता को नई दिशा व ऊर्जा प्रदान करे।

दयाशंकर सिंह

(दयाशंकर सिंह)
(दयाशंकर सिंह)
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
परिवहन विभाग, उ०प्र०

श्री अजीत दूबे जी,
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
विश्व भोजपुरी सम्मेलन

आवास : 9 - कालीदास मार्ग, लखनऊ । ☎: 0522- 2235033 📱: 9415026384
dayashankar4bjp@gmail.com, psparivahan2022@gmail.com dayashankarsingh dayashankar4bjp

कपिल मिश्रा
कानून एवं न्याय, श्रम, रोजगार, विकास, कला, संस्कृति व भाषा तथा पर्यटन मंत्री

Kapil Mishra
Minister of Law & Justice, Labour, Employment, Development, Art, Culture & Language and Tourism

सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
Govt. of National Capital Territory of Delhi-110002
दिल्ली सचिवालय आई.पी.एस्टेट, नई दिल्ली–110002
Delhi Secretariat, I.P. Estate, New Delhi-110002
Tele No.: 23392067, 23392123 Fax: 23392055

D.O. No.: MOLTLED ACLT/2025/306

Date.: 26/03/2025

शुभकामना संदेश

प्रिय, विश्व भोजपुरी सम्मेलन के सभी आयोजकगण, सम्मानित अतिथिगण एवं सहभागियों,भोजपुरी भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति के प्रचार-प्रसार और संवर्धन के लिए आपका यह प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय है। विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा आयोजित "भोजपुरी आत्मसम्मान पर्व: 2025" के 06 अप्रैल 2025 को होने वाले 18वें राष्ट्रीय अधिवेशन के शुभ अवसर पर, मैं आप सभी को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाइयाँ प्रेषित करता हूँ।

भोजपुरी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और भावनाओं की अभिव्यक्ति है, जो करोड़ों लोगों को एक सूत्र में बाँधती है। इस भाषा ने साहित्य, संगीत, कला, सिनेमा और लोकसंस्कृति के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई है। ऐसे आयोजनों से भोजपुरी भाषा और इसकी सांस्कृतिक गरिमा को एक नई ऊर्जा और दिशा मिलती है।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन पिछले कई दशकों से इस महान परंपरा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह सम्मेलन न केवल भोजपुरी समाज को जोड़ने का कार्य कर रहा है, बल्कि नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने और भाषा के गौरव को पुनर्स्थापित करने का भी एक सशक्त माध्यम बन रहा है। इस मंच के माध्यम से देश-विदेश में फैले भोजपुरी भाषी लोग एकजुट होकर अपनी संस्कृति को मजबूती प्रदान कर रहे हैं।

मैं आशा करता हूँ कि यह आयोजन भोजपुरी भाषा और इसकी विरासत को और अधिक सशक्त करेगा तथा इसे वैश्विक मंच पर नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगा। मैं इस महत्वपूर्ण पहल के लिए विश्व भोजपुरी सम्मेलन के सभी पदाधिकारियों, आयोजकों और प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई देता हूँ और इस आयोजन की सफलता की मंगलकामना करता हूँ।

आप सभी को "भोजपुरी आत्मसम्मान पर्व: 2025" के अवसर पर पुनः ढेरों शुभकामनाएँ।

सादर,

Kapil

(कपिल मिश्रा)

श्री अजीत दुबे
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
विश्व भोजपुरी सम्मेलन,

आपन बात

—अजीत दुबे, राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व भोजपुरी सम्मेलन

इतिहास साक्षी बा कि जे समाज आपन भाषा आ संस्कृति पर गर्व करेला आ ओकरा बढ़ावे-बचावे खातिर प्रयास करेला, उहे दुनिया में मान-सम्मान पावेला। विश्व भोजपुरी सम्मेलन संस्था पिछला 30 साल से भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के प्रचार-प्रसार आ संरक्षण खातिर काम करत बा। हमनी के अब तक 17 राष्ट्रीय आ 4 अंतरराष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित कइले बानी।

मॉरीशस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हालिया यात्रा (मार्च, 2025) भोजपुरी के वैश्विक पहचान के एक नया अध्याय जोड़लस। ओहिजा उनकर स्वागत भोजपुरी 'गीत गवई' से भइल। प्रधानमंत्री जी आपन संबोधन भोजपुरी में शुरू कइलन। इ ना खाली सांस्कृतिक जुड़ाव के प्रतीक बा, बल्कि भोजपुरी के सॉफ्ट पावर के ताकत भी देखावत बा। मॉरीशस में भोजपुरी बोलनिहार लोगन के आबादी ढेर बा। गिरमिटिया पुरखन के खून-पसीना से जुड़ल बा। प्रधानमंत्री जी के एह यात्रा से भोजपुरी भाषा के सम्मान आ ओकर वैश्विक मंच पर पहचान बढ़ल बा।

दूसरा तरफ, उत्तर प्रदेश विधानसभा में भोजपुरी भाषा के सदन के भाषा के रूप में मान्यता मिलल, जे भोजपुरीभाषी लोगन के लंबा संघर्ष के फल बा। इ फैसला भोजपुरी के राजनैतिक आ प्रशासनिक स्तर पर मजबूती देत बा। अब भोजपुरिया विधायक लोग सदन में भोजपुरी में आपन बात राख सकत बा। एह से लोकतंत्र में जनता के आवाज अउर मजबूती से सुनाई दिही। उत्तर प्रदेश विधानसभा एह मायने में एक नया शुरुआत कइलस कि बिना आठवीं अनुसूची में शामिल भइले भी कवनो भाषा सदन के कार्यवाही के हिस्सा बन सकत बा। एह से उम्मीद जागल बा कि जल्दिए बिहार विधानसभा/विधान परिषद एवं दिल्ली विधानसभा के साथे-साथ संसद के दुनो सदन में भी भोजपुरी कार्यवाही के भाषा बन पाई, हमरा एह बात पर आशा ही नहीं, पूरा विश्वास बा।

बाकी भारत में भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता आज भी अधर में लटकल बा। नेपाल में 2018 में 25 सांसद भोजपुरी में शपथ लिहलन, बाकी भारत में भोजपुरीभाषी सांसदन के एह अधिकार से वंचित राखल गइल बा। भोजपुरी 1300 साल पुरान भाषा बा, जे 16 देशन में फैलल बा आ 20 करोड़ से बेसी लोग एकरा बोलेला, बाकी भारत में भोजपुरी के ऊ सम्मान नइखे मिलल जे एकर हक बा। संसद में 5 बार आश्वासन आ 20 प्राइवेट मेंबर बिल के बावजूद, सरकारी उदासीनता आ एकजुट प्रयास के कमी से इ मामला अटकल बा।

संवैधानिक मान्यता ना मिलला से भोजपुरी तमाम सुविधा से वंचित बा। मसलन, राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, साहित्य अकादेमी सम्मान आ सरकारी आर्थिक सहायता जइसन सुविधा एकरा के नसीब ना हो पावेला। बाकी मॉरीशस यात्रा आ यूपी विधानसभा के फैसला से उम्मीद जागल बा कि भोजपुरी के दिन बहुरिहें।

माननीय प्रधानमंत्री जी पटना, बलिया, गोरखपुर से लेके नीदरलैंड तक भोजपुरी में संबोधन कईले बानी आ मॉरीशस में भी भोजपुरी के गूँज सुनाइल बा। केंद्रीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह जी भी कहले बानी कि सरकार भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे खातिर गंभीर बा। हमार आपन अनुभव कहत बा कि भोजपुरी के मान्यता से हिंदी या कवनो दूसर भाषा के कवनो नुकसान ना होई। आदरणीय केदारनाथ सिंह जी के शब्द 'भोजपुरी हमार घर बा, हिंदी हमार देश'—'ना घर छोड़ल जा सकेला, ना देश' हमनी सब के भावना प्रदर्शित कर रहल बा।

भोजपुरी के संविधान में शामिल करे के माँग ओकर अस्मिता आ सुविधा खातिर बा, हमनी के यकीन बा कि मॉरीशस यात्रा, यूपी विधानसभा के फैसला, आ एह तरह के कदम भोजपुरी के हक दिलावे में मील के पत्थर साबित होई। बिहार, दिल्ली, आ संसद में भी भोजपुरी के गूँज सुनाई, एह विश्वास के साथ हमनी के इ माँग जल्दिए पूरा होखी।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन : एक परिचय

जगदीश नारायण उपाध्याय, सचिव, कार्यालय, विश्व भोजपुरी सम्मेलन

विश्व भोजपुरी सम्मेलन, भोजपुरी भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति एवं जीवन-शैली के प्रचार-प्रसार, संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए समर्पित एक विश्व स्तरीय संगठन है। विश्व भर में अपने श्रम, प्रतिभा, कल्पना-शक्ति और समर्पण के कारण अपना विशेष स्थान बनाने वाले 20 करोड़ भोजपुरियों की एकता, आपसी संवाद, पहचान और अपनी मिट्टी की गंध बनाए रखने और उनके लिए एक विश्व मंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सन् 1995 में 'सेतु न्यास' मुंबई की सहायता से संस्था की स्थापना हुई थी।

अल्पावधि में सम्मेलन ने भोजपुरिया कला और संस्कृति के क्षेत्र में तो कीर्तिमान स्थापित किया ही है लाखों लोगों को एक मंच पर जुटाकर उनकी अस्मिता का बोध भी कराया है।

अधिवेशन :

हर चार वर्ष पर विश्व सम्मेलन और प्रतिवर्ष राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन सम्मेलन द्वारा आयोजित होता है। अब तक हुए सम्मेलनों का विवरण निम्नवत है :

विश्व सम्मेलन	1995	देवरिया (भारत)
	2000	मोका (मॉरीशस)
	2003	कोलकाता (भारत)
	2009	पोर्ट लुई (मॉरीशस)
राष्ट्रीय अधिवेशन	1996	पटना
	1997	नई दिल्ली
	1998	भोपाल
	2000	अंधेरी/मुंबई
	2001	भिलाई
	2004	नागपुर
	2006	ठाणे
	2007	वाराणसी
	2010	आगरा
	2011	ऋषिकेश
	2014	नई दिल्ली
	2017	वाराणसी
	2022	वाराणसी
	2025	नई दिल्ली

विश्व एवं राष्ट्रीय अधिवेशन में लाखों-लाख लोग अतिथि, कलाकार, प्रतिभागी एवं दर्शक-श्रोता के रूप में उपस्थित रहे।

अतिथि :

विश्व एवं राष्ट्रीय आयोजनों में मुख्य अतिथि, सभाध्यक्ष एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में निम्नलिखित व्यक्तियों ने पधारकर विश्व भोजपुरी समाज को सम्मानित एवं गौरवान्वित किया।

डॉ. शंकर दयाल शर्मा	राष्ट्रपति, भारत सरकार
डॉ. कासिम उतीम	राष्ट्रपति, मॉरीशस
डॉ. नवीन रामगुलाम	प्रधानमंत्री, मॉरीशस
श्री पॉल वरांजे	पूर्व प्रधानमंत्री, मॉरीशस
श्री ए.आर. किदवई	राज्यपाल, बिहार
श्री रोमेश भंडारी	राज्यपाल, उत्तर प्रदेश
न्यायमूर्ति प्रभाशंकर मिश्र	मुख्य न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, तमिलनाडु
न्यायमूर्ति के.एन. सिंह	मुख्य न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय, भारत

बटोहिया

—बाबू रघुवीर नारायण

सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से
मोरे प्रान बसे हिम-खोह रे बटोहिया।
एक द्वार घेरे राम हिम-कोतवलवा से
तीन द्वार सिंधु घहरावे रे बटोहिया
जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिंद देखि आउ
जहवाँ कुहुँकि कोइलि बोले रे बटोहिया
पवन सुगंध मंद अगर चननवाँ से
कामिनी बिरह-राग गावे रे बटोहिया
बिपिन अगम घर सझान बगन बीच
चंपक कुसुम रंग देवे रे बटोहिया
द्रुम बट पीपल कदम्ब निम्ब आम वृक्ष
केतकी गुलाब फूल फूले रे बटोहिया
तोता तूती बोले रामा बोले भेंगरजवा से
पपिहा के पी-पी जिया सारे रे बटोहिया
सुंदर सुभूकम भइया भारत के देवसा से
मोरे प्रान बसे गंगा धार रे बटोहिया
गंगा रे जमुनवा के झगमग पनिया से
सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया।
ब्रह्मपुत्र पंचनद घहरत निसि-दिन
सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया
अपर अनेक नदी उमड़ि-एमड़ि नाचे
जुगन के जदुआ जगावे रे बटोहिया
आगरा प्रयाग काशी दिल्ली कलकतवा से
मोरे प्रान बसे सूरज तीरे रे बटोहिया
जाउ-जाउ भैया रे बटोही हिंद देखि आउ
जहाँ ऋषि चारो बेद गावे रे बटोहिया
सीता के बिमल जस राम-जस कृष्ण-जस
मोर बाप-दादा के कहानी रे बटोहिया
रामानुज रामानंद न्यारी प्यारी रूपकला
ब्रह्मा-सुख-बन के भँवर रे बटोहिया
नानक कबीर गौर संकर श्री रामकृष्ण
अलख के गतिया बतावे रे बटोहिया
विद्यापति कालिदास सूर जयदेव कवि
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया
जाउ-जाउ भैया रे बटोही हिंद देखि आउ
जहाँ सुख झूले धान खेत रे बटोहिया
बुद्धदेव पृथु विक्रमार्जुन सिवाजी के
फिर-फिरि हिय सुध आवे रे बटोहिया
अपर प्रदेस देस सुभग-सुघर बेस
मोरे हिंद जग के निचोड़ रे बटोहिया
सुंदर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेहि
जन 'रघुवीर' सिर नावे रे बटोहिया।

श्री मोती लाल बोरा	राज्यपाल, उत्तर प्रदेश
श्री महावीर प्रसाद	राज्यपाल, हरियाणा
श्री मु. शफी अहमद कुरैशी	राज्यपाल, मध्य प्रदेश
श्री दिनेश नंदन सहाय	राज्यपाल, छत्तीसगढ़
श्री वीरेन जे. शाह	राज्यपाल, पश्चिम बंगाल
श्री चंद्र शेखर	पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार
श्री वी.पी. सिंह	पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार
श्री अजित जोगी	मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

अन्य विशिष्ट अतिथि : सर्वश्री नौशाद, ए.के. हंगल, शत्रुघ्न सिन्हा, सुजीत कुमार, राकेश पांडेय, बिरजू महाराज, डॉ. कपिला वात्स्यायन, संगीतकार श्रवण, अभिनेता कुणाल, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. केदार नाथ सिंह, डॉ. मैनेजर पांडेय, अनूप घोषाल, सौमित्र चटर्जी, डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, मंगेश पडगाँवकर।

महत्वपूर्ण कार्य : सम्मेलन ने कला, साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में स्थायी महत्व के निम्नलिखित कार्य किए हैं :

1. भोजपुरी-हिंदी शब्दकोश का प्रकाशन
2. विश्व स्तरीय त्रैमासिक पत्रिका 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' का प्रकाशन (अब तक 32 अंक प्रकाशित)
3. 'ग्राम देवता' (उपन्यास) का प्रकाशन
4. प्रख्यात साहित्यकारों/कवियों के अपने गाँव के संस्मरणों पर आधारित 'हमार गाँव' का प्रकाशन
5. भोजपुरी के अमर लोकगीतों का ऑडियो कैसेट चार खंडों में जारी (जीवन चक्र, ऋतु चक्र, श्रम चक्र एवं भक्ति चक्र)

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित परियोजनाएँ प्रक्रिया में हैं :

1. भोजपुरी व्याकरण
2. भोजपुरी साहित्य का इतिहास
3. भोजपुरी-अँग्रेजी-हिंदी शब्दकोश

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के प्रस्ताव एवं सहयोग से हुए अन्य कार्य :

1. काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में विश्व स्तरीय 'भोजपुरी अध्ययन एवं शोध केंद्र' की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान।
2. साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली में भोजपुरी के साहित्यकारों के लिए पचास हजार रुपये का 'भाषा सम्मान' देने का प्रस्ताव स्वीकृत। अब तक 'भाषा सम्मान' से सम्मानित कवि श्री धरीक्षण मिश्र एवं श्री मोती बी.ए.।
3. महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में 'भारतीय प्रवासी केंद्र' की स्थापना।
4. पोर्ट लुई (मॉरीशस) में 'इंडियन डायस्पोरा सेंटर' की स्थापना।
5. गोरखपुर सहित उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र के विश्वविद्यालयों में बी.ए. एवं एम.ए. के पाठ्यक्रमों में भोजपुरी का अध्ययन-अध्यापन।
6. विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों में लोक-साहित्य और भोजपुरी साहित्य पर शोध करने वाले लगभग सौ छात्रों को सहयोग।

विश्व सम्मेलनों एवं राष्ट्रीय अधिवेशनों में 'सेतु सम्मान' तथा 'भिखारी ठाकुर सम्मान' से सम्मानित साहित्यकार/कलाकार

		साहित्यकार	*कलाकार*
क्र.	*वर्ष*	*सेतु सम्मान से सम्मानित*	*भिखारी ठाकुर सम्मान से सम्मानित*
1.	1995	श्री धरीक्षण मिश्र	श्रीमती विंध्यवासिनी देवी
2.	1996	श्री गणेश चौबे	श्रीमती शारदा सिन्हा
3.	1997	डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय	श्री हीरा लाल यादव
4.	1998	श्री मोती बी.ए.	श्रीमती शांति देवी
5.	2000	श्री चंद्रशेखर मिश्र	पद्मश्री सविता देवी
6.	2001	श्री कमला प्र. मिश्र 'विप्र'	श्री भरत शर्मा व्यास
7.	2003	श्री राम जियावन दास 'बावरा'	श्री राम कैलाश यादव
8.	2004	डॉ. विवेकी राय	श्री मनोज तिवारी 'मृदुल'
9.	2006	डॉ. रामदेव शुक्ल	श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव
10.	2007	दण्डि स्वामी विमलानंद सरस्वती	श्री रामचंद्र 'अजेय'
11.	2010	श्री पाण्डेय कपिल	जी. तिवारी (महुवा चैनल)
12.	2011	श्री हरिराम द्विवेदी	श्रीमती मालिनी अवस्थी
13.	2014	डॉ. अशोक द्विवेदी	श्रीमती विजया भारती
14.	2025	श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी	श्रीमती कल्पना पटवारी

भोजपुरी के भविष्य

—केदारनाथ सिंह

सभा के अध्यक्ष एवं विश्वविद्यालय के रेक्टर ब्रह्मदेव जी, हिंदी विभाग के अध्यक्ष राधेश्याम जी, सदानन्द शाही एवं मित्रो! कहल गइल बा कि भोजपुरी में बोले के बा। भाई हमार अबहिन ले माई जीयत बा, अउर केहू से बोलीं चाहे ना बोली बाकी ओसे भोजपुरिए में बोले के होला, आ जे भोजपुरिया लोग बा गाँव-घर के लोग ओसे भोजपुरिए में बोले के होला। एही से भोजपुरी हमरा भीतर अबहिन जिंदा बा, मरल नइखे। पँइतिस साल से ज्यादा हो गइल दिल्ली में रहत, ओहू में दिल्ली क जवन सबसे अल्ट्रामाडर्न यूनिवरसिटी ह जे.एन.यू. ओसे संबंध रहल, लेकिन बात एहीं से शुरू करी कि सबसे ज्यादा लोकप्रिय नाटक जवन जे.एन.यू. में खेलल गइल उ भोजपुरी में रहे। अक्सर कउनों कहानी जइसे 'पंथ नये' (वेणुगोपाल) के कहानी क नाट्य प्रस्तुति भोजपुरी में बहुत लोकप्रिय रहे। जे.एन.यू. में बहुभाषी समाज रहे, उहाँ तमिल भाषी हउअं, उहाँ मराठी भाषी हउअं, लेकिन भोजपुरी से ज्यादा लोकप्रिय मंच कवनो अउर भाषा क न रहे। एकर मतलब ई भइल कि भोजपुरी अपने लोक तक पहुँचे खातिर बड़ माध्यम बा। रउआँ सभे भोजपुरी में बात करीला। हमरा याद आवता गुरु हजारी प्रसाद द्विवेदी, उहाँ के गइल रहनी पटना। भोजपुरी सम्मेलन के उद्घाटन करे खातिर। अध्यक्षता करत रहनी बाबू जगजीवन राम। लौट के जब अइनी, पूछल गइल कइसन आयोजन रहल त कहनी कि 'हमरा संदेश रहे कि हम भोजपुरी में बोल ना सकीला जबकि घर में भोजपुरी बोली ला।' हमरा से कभी ऊ हिंदी में बात ना करें। भोजपुरिए बोलें। विश्वविद्यालय में जब भी मिलें त भोजपुरी बोलें। एगो कथन उनकर याद आवेला। जब एम.ए. कऽ लेहनी, पी.एच.डी. भी कऽ लेहनी त एक दिन मिललन त कहलन कि "का हो, तोहरा के कहीं खोसे के चाहता।" हँ त पंडित जी कहनीं कि "जब हमसे कहल गइल कि भोजपुरी सम्मेलन के उद्घाटन करीं त हमरा दिल बइठ गइल। भोजपुरी त मंच से बोलले नइखीं, घर में बोलीलें। घर से मंच के दूरी त बड़ा लंबा बा। लेकिन आग्रह रहे कि बोले के बा भोजपुरी में। त जब बोले शुरू कइनी त अइसन प्रवाह बनल कि हिंदी में त कहीं-कहीं अटके के पड़ेला, लेकिन भोजपुरी में कहीं अटके के ना पड़ल। जउने के गंभीर विचार कहल जाला ऊ सब भोजपुरी में एतना आसानी से व्यक्त हो जात रहल कि हमरा के खुदे पर आश्चर्य होत रहल कि भाई हम जानत काहे ना रहली हँ। भोजपुरी के लेके एतना बड़ा भ्रम हमरे अंदर बनल रहल। ऊ भ्रम टूटल ओह दिन।" ई जीवन के अंतिम समय के बात हऽ। कहलन कि "देखऽ, हम जिंदगी भर लिखनी हिंदी में। ऊ हमार एगो उपन्यास पढ़ले होखबऽ, 'बाणभट्ट की आत्मकथा'। हम सोचत हईं कि अगर एकरा के हम भोजपुरी में लिखले रहितीं त ई तनी अउर नीमन भइल रहित। भोजपुरी हम थोड़ा सहज ढंग से लिख सकल रहलीं। हिंदी में त थोड़ा कृत्रिम बने के पड़ल, शायद भोजपुरी में उ ना होइत।" अँग्रेजी त कम बोलत रहें, लेकिन एगो बात कहलन प्जे जवव स्ंजम, कि अब हम भोजपुरी में लवटि के का कर सकीलाँ।

हम एह मंच से भोजपुरी बोलत बानी। कवनो सबूत नइखे कि एतना साल से हिंदीए में बाड़ीं आ जवन थोड़ा-बहुत लिखले बाड़ी हिंदीए में लिखले बाड़ी। बाकी इहाँ बी.ए., एम.ए. कइलीं। हॉस्टल में रहलीं। भगवानदास, गूर्टू हॉस्टल। ओह समय जेतना नया साहित्यकार रहलन सबकर हॉस्टल गूर्टू रहे। ओमे नामवर सिंह जी भी कुछ दिन रहलन। शिव प्रसाद सिंह, विश्वनाथ त्रिपाठी, रमेश कुंतल सब ओही में रहे। ई सब लोग एक्के हॉस्टल में रहत रहे। बीच-बीच में गोष्ठी भी होत रहे। बहरहाल ओह समय एगो रघुवंश नारायण सिंह रहत रहलन, 'भोजपुरी पत्रिका' निकालत रहलन, आरा से। एकदम समर्पित। भोजपुरी क झंडा लेके घूमे वाला। ओह घरी राजेंद्र प्रसाद जी देश के राष्ट्रपति रहलन। ओह समय के प्रश्न रहे कि देश के भाषा कवन होखे के चाहीं। त उनकर परिभाषा रहे कि जवन भाषा राष्ट्रपति क भाषा हो उहे राष्ट्रभाषा रहे के चाहीं। त राष्ट्रपति के भाषा भोजपुरी ह त राष्ट्रभाषा भी भोजपुरी होखे के चाही। उनका के ई सिद्धांत रहे। ऊ सबके इहाँ जास। नामवर सिंह के इहाँ भी, शिवप्रसाद जी के इहाँ भी आ हमरा इहाँ भी आवस। आ कहें कि भोजपुरी में लिखऽ जा। भोजपुरी में भविष्य बा। ऊ जमाना रहे जब हिंदी राष्ट्रभाषा बनल रहे, कि अब हिंदी के समय आ गइल बा। हिंदी राजभाषा बनल, थोड़ा बाद में। त एक तरह से हिंदी के भीतर बड़ा भारी भविष्य निर्मित हो रहल बा, त हमनी के हिंदी के काम करे के चाही। हिंदी में काम भइल। हमरा आज महसूस हो रहल बा कि काश भोजपुरियो में लिखे के प्रयास कइले रहितीं। बाद में, हमरा ध्यान गइल कि हमार हिंदी के महान साहित्यकार नागार्जुन मैथिली में लिखले बाड़ें। संस्कृत में भी लिखले बाँड़न, बाँगला में भी लिखलन। उनकर मातृभाषा रहल मैथिली। हिंदी में उनकर महत्व बा, लेकिन हमार आज भी मान्यता बा कि ऊ मैथिली के ज्यादा बड़हन कवि हउएँ। 'पत्रहीन नग्न गाछ' उनकर मैथिली कवितन के संग्रह हऽ। अउर बड़ी गहरी दृष्टि रहे उनका पास। केहू कहल कि बाबा एकर नउए हमके कुछ गड़बड़ लागत बाऽ। पत्रहीन भी बा, नग्न भी बा। बोललन कि ना, तोहार जानकारी कम बा। एगो स्थिति होला कि पत्ता झड़ गइल, पत्रहीन बाकी छाल बा। एगो स्थिति होला कि पत्ता झड़ गइल अ छालो उतार लेहल जाला, अइसन पेड़ होला 'पत्रहीन नग्न गाछ'। त ई जवन संस्कार उनका भीतर रहल, लोक से आइल। एह संस्कार के भीतर से निकल रहल 'पत्रहीन नग्न गाछ'।

बहरहाल, ऊ दूनो भाषा में समान रूप से संचरण कर सकल रहेलें। ई कइसे संभव रहे? बाकी दुनिया के अनेक बड़े कवि रहलें जवन कई भाषा में रचना कइलें हवन एक साथ। बाबा के काम से आज हमरा बुझाला कि कुछ सीखल जा सकेला। लेकिन पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी के तरे बुझला हमके प्जे जवव स्ंजम। अब भोजपुरी में लौटल ना जा सकेला। हम महसूस करीला कि धीरे-धीरे एगो अपना सोच के, संवेदन के एगो दूसरा भाषा के लय में प्रवेश कइल कठिन बा। ई कठिन काम करे के चाही। फैज महाकवि रहलन उर्दू के। एक बार दिल्ली अइलें। हम सुनले रहलीं कि ऊ पंजाबी में लिखलें बाड़ें। हम पूछनी उनसे कि आप पंजाबी में लिखले बाड़ीं। सवाल सुनके बड़ा खुश भइलीं आ बोलनी कि हँ, अच्छा सवाल पूछला ह। हमार बोली ह पंजाबी। घर में पंजाबी बोलीलाँ। आ ऊ पंजाबी ना जवन इहाँ अमृतसर में बोलल जाला। ऊ पंजाबी खाटी, पश्चिमी पंजाबी। जवन गाँव-देहात में बोलल जाला। ओमें कुछ लिखने बाड़ीं।

एगो प्रवृत्ति एह बीच आइल बा। ओह प्रवृत्ति के साथ हम जोड़े चाहत बानी भोजपुरी के अभियान के। भोजपुरी में जागरण आइल बा। ई वंचित लोगन के भाषा बा। वंचित लोग आ समुदाय के लेके आंदोलन पूरी दुनिया में चल रहल बा। भाषा के बीच, भाषा के इतर। ऊ जवन बोली बाड़ीं स जवन दबल हयीं स। जवन हिंदी हम सबे बोलत बाड़ीं ओह हिंदी के व्यवहार अपनी बोलियन के प्रति थोड़ा-सा कड़ा रहे। एक बात पर आप सबन का ध्यान आकर्षित करे चाहत बानी कि साहित्य अकादेमी में जब भोजपुरी

के मान्यता के सवाल आइल जवन आज तक ना मिलल। डोगरी के मान्यता बा। डोगरी बोले वाला नइखन, लेकिन ऊ कर्ण सिंह के भाषा ह। ओके त मिल गइल। हमनी जइसन सदस्यन के प्रयास से ई भइल बा आधी मान्यता मिलल बा। आधी मतलब ओहे भाषा में दू-चार साल में एगो पुरस्कार दीहल जाई। लेकिन पूर्ण मान्यता मिल गइल अगर हमार गुरु हजारी प्रसाद द्विवेदी ओह समय जोर देहले रहतीं। ऊ कहत रहलन कि हमरा से गलती हो गइल। जब ई प्रश्न आइल कि भोजपुरी के मान्यता मिले, ओकरे विकास के रस्ता खुले त हमरे मन में एगो हिचक रहे, आ ई हिचक अजुओ बहुत बड़े समुदाय में बा कि एसे हिंदी के क्षति होई, एहसे ओ घरी हम ओकरा विरुद्ध मतदान कइनीं। ओकर परिणाम ई भइल कि आज तक साहित्य अकादेमी में भोजपुरी के मान्यता ना मिलल। शायद भविष्य में मिल जाए। लेकिन भोजपुरी में समस्या बाड़ी स।

कभी-कभी भोजपुरी कहानी मिल जानी स त बुझाला कि कुछ कहानी अच्छा लिखल जा ताड़ी से। कहानी क संग्रह छपले बा साहित्य अकादेमी, 'भोजपुरी कहानियाँ'। ओमे कुछ कहानी अच्छी बाड़ी स। एह कुल से बुझाला कि भोजपुरी में एगो जातीयता आइल बा, चुपचाप। दिक्कत का बा कि भोजपुरी में प्रकाशन के कवनो व्यवस्था नइखे। व्यक्तिगत प्रयास से जवन प्रकाशन चलत बा ओकर मार्केटिंग नइखे। ई आधुनिक विकास के खातिर बहुत जरूरी बा। ई होत नइखे। हमरा अच्छा लागल देवरिया जिला में उहाँ के प्राइमरी, मिडिल स्कूल के अध्यापक लोग, कहल लोग कि हमनी के किताब छापी ले एके हम भोजपुरी जागरण से जोड़ के देखत बानी कहानी कविता छापी ले। समूह बनाके अपना जिला स्कूलन में अध्यापकन के बाट दीही ले जा। अ ऊ लोग अपना क्षेत्र में बेचे ला। अ बेच के फिर पैसा वापस भेज देवेला लोग। ई एक तरह क सरकारी प्रयास हो रहल बा। ओमे केतना सफल बा कितना असफल ई हम नइखी जानत। बड़ी भारी एगो समस्या बा। एगो विडंबना रउआ से बताइब। हम ए खातिर बताइब कि खास तौर से कि रेक्टर साहब इहाँ बाड़ीं। भोजपुरी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में दाखिल हो गइल। ई भोजपुरी क्षेत्र ह, अ ओकर सबसे मुख्य क्षेत्र। विश्वविद्यालय में भोजपुरी के प्रवेश हो गइल। लेकिन आगे जवन कठिनाई आई ओसे हम आगाह करे चाहत बानी। भोजपुरी के पाठक के भोजपुरी से प्यार होला। स्व. प्रभुनाथ सिंह जी जिनके प्रयास से बिहार विश्वविद्यालय में भोजपुरी दाखिल हो गइल। अ विडंबना ई कि बी.ए. में पहिले भोजपुरी चालू भइल। नीचे प्राइमरी, मिडिल में भोजपुरी नइखें। बी.ए. स्तर पर ऊ पहिले-पहिले आइल। रउआ सभे बी.एच.यू. में का करब हम नइखीं जानत। अ रउआ सभे क मजबूरी बा ऊपर से शुरू करब। काहे से की इहाँ प्राइमरी वगैरह हइये नइखें। ऊ लोग शुरू त कइल, लेकिन समस्या ई भइल कि पाठ्य पुस्तक कहाँ से आयी। पाठ्य पुस्तक त रहबे ना कइल। पाठ्य पुस्तक छापे खातिर कवनो प्रकाशक तैयार ना। विश्वविद्यालय के पास कवनो प्रावधान ना रहे। त बड़ी समस्या आइल कि बिना पाठ्य पुस्तक के कोर्स कइसे चली। ई समस्या रउओ सभे के सामने आयी। एकर बदे चाहीं कि आपन प्रकाशन खोली जा। बड़ी व्यावहारिक समस्या बाड़ीं स भोजपुरी के सामने भोजपुरी के विकास से जुड़ल बाड़ी स एकर समाधान कइसे निकाली। एके सोचे के पड़ी। एगो चिंता भोजपुरी समाज के बहुत बड़ी बा। भोजपुरी गोष्ठी में जाईलें त ई सुने के मिलेला कि हमनी के मानकीकरण के समस्या से जूझत बानीं जा। स्टैंडर्ड भोजपुरी कइसे बनी। केहू कही कि भोजपुरी के एगो कामता प्रसाद गुरु के जरूरत बा। अइसन कवनो व्यक्ति भोजपुरी में ना भइल। सौभाग्य से ना भइल। भोजपुरी के मानकीकरण स्वतःस्फूर्त बा, धीरे-धीरे ओकर विकास होई। आज के जवन हिंदी बा ओकर कइसे मानकीकरण भइल। एकर इतिहास कबो तलासल ना गइल। हिंदी कवना क्षेत्र से आइल, कहाँ के बोली ह ई। एपर बहुत मत बा, अ ओपर बहुत बहस विचार क गुंजाइस बा। जवन हम शुरू से पढ़त रहलीं कि खड़ी बोली मेरठ-आगरा के आस-पास क बोली रही। ओ खड़ी बोली के धीरे-धीरे विकास भइल। ओ हिंदी से, मंच से जवन हिंदी बोलीला आ जवन हिंदी रउआ सब भी पढ़िले जा ओसे एतना दूर क रिस्ता बा कि संबंध जोड़े में कठिनाई होई। हरियाणवी जरूर अलग बिया। नवजागरण जब आइल हिंदी क्षेत्र में। रामविलास जी कहलें कि हिंदी कविता में ओपर एगो बहस हो सकेला, बहस क बहुत गुंजाइस बा। हिंदी क्षेत्र में खाली हिंदीए ना ह उर्दूओ ह। ओहू के जाने के पड़ी, खाली हिंदी नवजागरण कहला से बात ना बनी, उर्दू काहे ना कहाई। ओ में बड़ा साहित्य लिखल गइल। बड़ भाषा ह। हिंदी के जनम ठीक-ठीक कहाँ से भइल, बहस क विषय बा, लेकिन बाद में बनारस, इलाहाबाद, पटना, दिल्ली, ना, दिल्ली अब भइल ह, उहो ठीक से नइखे भइल। ई ऊ क्षेत्र ह जवन खड़ी बोली से बहुत दूर क क्षेत्र ह, जेवना क्षेत्र में भोजपुरी बोलल जाला, वो क्षेत्र में बनल हिंदी। इहाँ एगो विद्वान रहस, भाषा विज्ञान पढ़ावस, दू-चार गो भाषण देस साल भर में, बाकी अच्छा पढ़ावस, ओसे थोड़ा-सा ज्ञान के सूत्र मिले। त ऊ कहस कि एक बात त तू लोग ध्यान दीहऽजा कि जयशंकर प्रसाद महाकवि हउए, ए में कवनो संदेह के बात नइखे, उनका भाषा में भोजपुरी केतना घुसल बिया, उनका विन्यास तक में, उनका सोच में, भोजपुरी के बहुत गहरा संबंध बा। एह क्षेत्र में बनल हिंदी; जहाँ भोजपुरी बोलल जात रहे, चाहे थोड़ा अवधी के क्षेत्र रहल। अवधी एक क्षेत्र, जवने के पूर्वी कहल जाला, ओ क्षेत्र में लिपिबद्ध हिंदी भइल अ खड़ी बोली नाम क एगो जवन चीज रहल, आदि भाषा हिंदी, ओकरा से एतना दूर के विकास भइल कि ओसे संबंध जोड़ के देखले में सुखद परिणाम ना आई। हमार ई सोच बा। ऊ समस्या भोजपुरी के लेके शुरू हो गइल बा।

अबहिन त भोजपुरी शुरू भइल ह त ई बहस होला कि कवन भोजपुरी? कहाँ क भोजपुरी? बनारस वाली भोजपुरी? भोजपुर वाली भोजपुरी? एकर नाम कइसे पड़ल? एह पर विचार हो सकेला। भोजपुर (आरा) के लोग कहि ह कि ऊ मानक भाषा हऽ। छत्तीसगढ़ी मतलब लगभग भोजपुरी, थोड़ा-सा बस अंतर बा, उच्चारण में कुछ शब्द के रूपन में, लेकिन बहुत करीब बा भोजपुरी के, ऊ लोग कहेला कि हमनी के मानक भाषा है। ई समस्या त रही। मानकीकरण कइसे होई। तेगअली के भाषा, बदमाश दर्पण के भाषा (बहुत तेवर वाली भाषा हऽ) जवना भाषा में रूद्र जी कुछ गजल लिखले बाड़ें त का ओह (काशिका) के मानक भाषा मानल जाए? त भोजपुरी के बहुत रूप बा, विविध रूप बा, सब चल रहल बा, ओमे से एगो के कहल जाय कि ई मानक रूप ह, एकर चुनाव कइल कठिन ह। हमार खयाल ह कि एके समय पर छोड़ दिहल जाए। धीरे-धीरे इतिहास के भीतर से प्रतिभा अइलें, अ ओकरे कृतित्व से मानकीकरण बनी। ऊपर से अतिरिक्त दबाव डाल के कहल जाव कि ई मानकीकरण हऽ त ई स्वाभाविक नतीजा ना होई बातचीत क। ओकरा के इतिहास पर छोड़ दीं। बनीं भोजपुरी। एह घरी एगो अउरी नारा उछलल बा कि भोजपुरी प्रदेश भ भोजपुरी राज्य कठिन बा। भोजपुरी एतना राज्यन में घुसल बा कि बहुत कटौती करे के परी। केहू कटौती खातिर तैयार नइखे। हमार ख्याल बा कि बहुत प्रादेशिक भोजपुरी रहे दीहीं जा। काट के एगो भोजपुरी प्रदेश बनवले क प्रयास शायद तर्कसंगत न होई। पंजाब में पंजाबी चलेला, हरियाणा में थोड़ा बहुत चलेला, और त और, पाकिस्तान में भी चलेला। पंजाबी में ज्यादा अच्छा लिखल पंजाब में हो रहल बा, लाहौर में हो रबल बा त अब रउआ कहब कि लाहौर के मिला के एगो पंजाबी प्रदेश बनावल जाय त ई अस्वाभाविक बात बा। भोजपुरी प्रदेश के बात थोड़ा-सा हमरा अनैतिहासिक लागेला। अ ओमे बहुत-सा संवैधानिक कठिनाई अइहे सऽ। भोजपुरी अनेक राज्यन में बा त ओकरा के रहे दीहीं। ओर प्रदेसन में भोजपुरी के संरक्षण के प्रयास हो रहल बा। इहाँ तक कि दिल्ली में। दिल्ली में भोजपुरी भाषी लाखों में बाँड़ें। वोट बैंक वाली राजनीति उहाँ भोजपुरी के महत्व बढ़ा दिहले बा। उहाँ भोजपुरी एकेडमी शुरू हो

गइल। हम ओकर मेंबर बानी, ओकरे पास कवनो बजट नइखे। त कवनो एगो भोजपुरी राज्य बन सकेला, हमरा संभव नइखे लागत। हालाँकि अइसन होई त भोजपुरी के विकास में जैसे छत्तीसगढ़ बन गइल त छत्तीसगढ़ के अपना-अपना करे चाहता लोग। भोजपुरी अलग बा, ओकर आपन विन्यास अलग बा। ओकरा एगो मजबूत भाषा बनावे क प्रयास हो रहल बा। ई त हो रहल बा कि राज्य बन जाई त एगो राजनीतिक आधार मिल जाई भाषा के विकास खातिर, लेकिन भोजपुरी क्षेत्र में एगो सामूहिक इच्छा शक्ति आ रहल बा। अदृश्य रूप में चल रहल बा।

हम महाश्वेता देवी से पूछनीं, दीदी, रउआ गइल रहनीं ह बिहार में, कइसन लागल ह। त सुनत हमार आँख खुल गइल, कहलीं जे एतना प्रबुद्ध जीवन अब बंगाल में नइखे, ई उनकर वाक्य रहल। एक तरह क राजनीतिक आ सामाजिक चेतना ओ क्षेत्र में धीरे-धीरे विकसित हो रहल बाटे जवना में बंगाल पिछड़ल बा। उनकर ई वाक्य रहल। ई एगो बड़ प्रमाण पत्र बा, एगो रचनाकार के कॉन्सस के प्रामाणिकता के साथ। उनकर ई टिप्पणी हमरा के बहुत महत्वपूर्ण लागल। धीरे-धीरे सक्रियता आ रहल बा। पंद्रह करोड़ लोग बोले वाला बा। एकरा के बचइहें एके बोले वाला लोग। ऊ लोग शहरों में बा, गाँवों में। विभिन्न समुदाय के लोग बा, मजदूर बोलेला, किसान बोलेला, हाट बाजार में चलेला।

ई अचानक नइखे कि कुछ नेता आपन भाषा के बोली के छौंक से जानदार बनावेंले। आ सबसे अच्छा उदाहरण बाँड़ें लालू प्रसाद यादव। भोजपुरी के छौंक देके एक खास तरह के हिंदी बनावे लें ऊ। उनकर राजनीति अलग बा। लेकिन ओतना जानदार भाषा अउर कवनो नेता के हम ना सुनलीं। अपना ढंग से रेणु भाषा बनउले अपना क्षेत्र के बोली के साथ। एह माने में हम उनकर योगदान मानेलीं। अचानक मीडिया में भोजपुरी जोर पकड़लस। महुआ चैनल खूब चल रहल बा।

भोजपुरी के विकास में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के भूमिका सकारात्मक बा, थोड़ा-सा नकारात्मक भी बा। ई जवन आजकल भोजपुरी गीत गावल जात बा, शादी में बजावल जात बा, कबों सुनी। दिल्ली में कहल जाला कि सबसे अश्लील गीत गावल जाला पंजाबी में। हमार ख्याल बा कि भोजपुरी के ई गीत पंजाबी के गीतन के पीछे छोड़ देले बा। ई इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के असर बाटे। एकरा के रोके के बा। भोजपुरी के स्वस्थ विकास होखे के चाही, ई जवन नकारात्मक प्रवृत्ति आ गइल बाटे एकरा के रोके के होई। उर्दू भाषा क विकास कोठा पर भइल रहे, नवाब वगैरह के उर्दू सीखे के रहे त ओकरा के कोठा पर जाय के पड़े। भोजपुरी के भी एगो कोठा बनावल जा रहल बा। खास तौर से ई गीतन में, एक खास तरह क प्रयोग होला जवन बड़ा दिलचस्प होला ऊ त हो रहल बा। चेतना के धरातल पर विकृति आ रहल बा। ओकरा के रोके के पड़ी, रऊआ सभे ध्यान दीहीं।

मॉरीशस क बात करी त हम रउआ सभे के बतावे चाहब की भोजपुरी उहाँ भी समाप्त हो रहल बा। भोजपुरी प्रकाशन मिलत नइखें। एगो अध्यापक हमसे मिले अइलें। बतवलन की इंटरमीडिएट स्कूल बा अ रउआ चली ओमें एगो भोजपुरी में भाषण दीहीं। देखी त का प्रतिक्रिया बा। त गइलीं, छात्रन से भोजपुरी में बातचीत कइली त हँसत रहने सब। हम पूछनी, काहे हँसत बाड़ऽ। सब कहलन की घरे में माई बाबू बोलेला, लेकिन हमनी के ना बोलीला जा। रउआ सभे के बताई कि एगो छात्र भोजपुरी बोले वाला ना मिलल ऊहाँ। हमनी के सोचीला कि मॉरीशस में भोजपुरी ह, लेकिन उहाँ से भी भोजपुरी जा रहल बा। त्रिनिदाद में भोजपुरी बोले वाला ना मिली। हिंदी जाने वाला बहुत कम। एगो पंडित जी मिललें, कथा बाँचे। ऊ अँग्रेजी में बोलें, थोड़ा-बहुत अँग्रेजी सीख लेले रहलन, बीच-बीच में संस्कृत भी बोल दें। हम कहनीं, पंडित जी भोजपुरी समाज (समाज बा, भाषा नइखे) में संगीत कार्यक्रम रहे, भोजपुरी में। भोजपुरी का बा। एगो शब्द रहे चटनी। चटनी संगीत कहेला लोग ओके। आ चटनी संगीत में का बा, भोजपुरी शब्द बा। अ कुछ ब्लैक लोग रहेला उनकर भाषा के शब्द त हावी बा, भोजपुरी नाम मात्र के, ऊ मिला के गावल जाला। हम कहनी, एमें भोजपुरी के दृश्य नइखे। भइल की इच्छा त सुनाबऽतऽ हई एगो गीत। गावल गइल देखी ओमें भोजपुरी केतना रहे। बीच में एगो पंक्ति रहे जेके बार-बार गावल जाय। सामूहिक गायन भइल। अच्छा भइल। ऊ पंक्ति रहल 'राम और रावण में भइल लड़ाई, रामा भइल लड़ाई रामा भइल लड़ाई।' एक्के लाइन। हम कहानी, दुसरका लइनियाँ कहाँ बा, दुसरका नइखें। एह देसन से भोजपुरी जा रहल बिया। हमनी के आपन संतोष के खातिर कहिला कि बा उहाँ भी, कुछ लोग क कोशिश बा कि बचावे के चाही। कइसे बची? भाषा के बचावल बड़ा मुश्किल काम बा। सौभाग्य से भाषा के रूप में ओकरा स्वीकार करे के चाही।

हम कहीला कि भोजपुरी घर ह आ हिंदी हमार देश ह। घर और देश में कवनो मोलभाव नइखे। देश रही त घर रही, आ घरे ना त देश कइसन। एक तरह क संबंध बोली आ राष्ट्र या देश के बीच बा। एह बोध से हमरा ख्याल बा कि एगो नया संबंध विकसित होई। एगो भोजपुरिया वक्ता रहें बिहार में। ऊ कहलन कि भाई हम हिंदी के लोगन से कहल चाहऽ तानी कि हिंदी के भोजपुरी आ अउर बोलियन के प्रति उहे दृष्टिकोण बा जवन अँग्रेजी क हिंदी के प्रति। तनी कटु प्रसंग रहे बाकी तनी सच्चाई भी बा। हमनी के अभी भी ओकरा के उपभाषा से आगे खुला कंठ से माने के तैयार नइखीं। भोजपुरी आ अउर कई बोलीयन में ई आकांक्षा पैदा हो गइल बा कि ऊ भाषा के दर्जा हासिल करे चाहत बा। आ ओकरा खातिर सचेत या चुपचाप प्रयास चल रहल बा। एह प्रयास के रोकल ना जा सकेला। एकरे परिणाम बा कि आज हिंदू विश्वविद्यालय में भोजपुरी के एगो विभाग खुल गइल। आज से चालीस साल पहिले पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी लगातार भोजपुरी बोलते रहिलीं बाकी ऊ ना कऽ पउलन। हाल-हाल तक ना भइल। आ ब्रह्मदेव जी के अभियान चल रहल बा। इहाँ के भोजपुरी भाषी ना हई, अवधी भाषी हईं। अवधी आ भोजपुरी के एगो निकट संबंध बा। हमरा ई ना बुझाला कि अवधी क्षेत्र में ओके लेके आंदोलन जोर काहे नइखे पकड़त। अवधी में महान ग्रंथ रामरचित मानस, पद्मावत जइसन ग्रंथ लिखाइल। अवधी क्षेत्र में अबहिन भाषिक चेतना नइखे आइल। बहरहाल, भोजपुरी क्षेत्र में आइल बा अइसन हमरा बुझाला। एकरा के हम एगो ऐतिहासिक औचित्य के नजर से देखीला।

जवन भोजपुरी के बहुत दिन से चाहत रहे, अब भइल बा। रउआ विभाग बना देहलीं, छात्र पढ़के जइहें कहाँ? नौकरी कहाँ करिहें? रउआ भोजपुरी में बी.ए., एम.ए. करा दीहलीं, डिग्री दे दीहलीं। नौकरी के दीही? ई बड़ी समस्या बा। ई सब स्तर पर भोजपुरी के जूझे के पड़ी। संविधान में मान्यता मिले के चाहीं। अगर ई होई कभी, आ एतना बड़ा जनसमूह जेकर बा, होइबे करी। आठवीं अनुसूची में भोजपुरी के शामिल करे खातिर एगो धक्का अउर लगावे के चाही। ई प्रयास हो रहल बा। कर्ण सिंह क एगो सुझाव रहे। एतना लड़ाई काहेके। संविधान के आठवीं अनुसूची जेमे बाईस गो भाषा बाड़िन सऽ, सब हटा के एगो वाक्य लिखे के चाही कि देश में जेतनी भाषा हईं स सब आठवीं अनुसूची में शामिल हईस। ई ज्यादा व्यावहारिक बा। काहे कि अनंत सूची बा। भोजपुरी के बाद समाप्त ना हो जाई। अनेक भाषा बाड़िन स। आदिवासी भाषा कहाँ जइहन स। संथाली भाषा में अच्छा लिखल जात बा। ऊ आदिवासी भाषा हउवे। पूर्वोत्तर भारत में बोड़ो में, असमिया में बहुत अच्छा लिखल जात बा। एक कविता नगभी के हम सुनलीं, नागा लोग के भाषा रहल। 'चींटी' पर बहुत बढ़िया कविता रहे। एक खास तरह के ज्ञान से निकलल हई स। आदिवासी भाषा में कविता लिखल जात बा। बोड़ो में लिखल जात बा। त हमरा कहे क मतलब ह कि भोजपुरी में जवन हो रहल बा ओही के प्रवाह में ही सब हो रहल बा। ज्यादा जागरूक ढंग से भोजपुरी में, पूर्वोत्तर भारत में हो रहल बा। भोजपुरी

में बहुत बोल ना सकीला। लेकिन जेतना भोजपुरी में हिंदी से बचा के रख सकली ओतना बोलनी ह। लेकिन भोजपुरी में कुछ काम करे के चाही। शायद एसे भोजपुरी में अउर कुछ जुड़े। बहरहाल, प्रयास हो रहल बा।

भोजपुरी के कुछ समस्या बाड़ी स, जिन पर हमनी के विचार करे के चाही। कवन भोजपुरी, कहाँ के भोजपुरी, मानक भोजपुरी कवन ह? भोजपुरी क कवनो मानकीकरण भइल बा कि ना? ई दू-चार गो समस्या बा। भोजपुरी लोकभाषा त बा। ओमे लिखल साहित्य लोकभाषा से जुड़ल शैली में लिखल जात बा। अच्छा बात बा ई। लेकिन जब भाषा विकास करे ले, तब ऊ साहित्यिक भाषा बने ले। ओह स्तर के कवनों प्रस्थान बिंदु भोजपुरी में ना आइल, मैथिली में ई काम ओही समय होत रहल। भोजपुरी में जहाँ कबीर जइसन बड़ा कवि भइल आ ऊ भोजपुरी में लिखलों बाड़े, त इतिहास से कवनो सूत्र मिलावे के कोशिश हमनी के ना कइनी जा। भारतेंदु के देखऽ। रवीन्द्र नाथ ठाकुर के देखऽ (ऊ त बहुत बड़ा व्यक्ति रहें) जवन एकदम भाषा के बदल दे। भाषा के ऊ रूप जवन साहित्यिक भाषा कहाला। साहित्य की भाषा, सर्जन की भाषा, अउर बोलचाल की भाषा और साहित्य की भाषा जवन के साहित्यिक भाषा कहल जाला, त सघन भाषा बने जवने में अभिव्यक्ति घुस सके। ई प्रयास ठीक से ना भइल। कुछ छिटपुट प्रयास बाड़े स। भिखारी ठाकुर के बड़का नाँव रहे भोजपुरी क्षेत्र में। आप लोगन के बतावल चाहत बानी कि एक एक बार भाषण सुनली उनकर। भाषण सुने के प्रसंग अद्‌भुत रहे। ई बात 1956 के आस-पास क ह। आरा शहर में नयी कविता पर एगो गोष्ठी रहे। नयी कविता क जमाना रहे। अबहिन नयी कविता गइल ना रहे। ओकर अध्यक्षता हम करत रहनी आ ओमे रहलन राजकमल चौधरी कुछ अउर बिहार के कवि। सामने बइठे वालन में गाँव के लोग जवन बजार करे आइल रहलन, कुछ अध्यापक, कुछ छात्र, एक विशिष्ट समाज रहे। सब लोग बोर होत रहे। अचानक हमार ध्यान गइल पीछे एगो बूढ़ा आदमी बाँस के खंभा के टेक लेके बइठल हवे। त उनका हम पहिले देखले रहली। ऊ भिखारी ठाकुर रहलें। नाचल गावल छोड़ दिहले रहलन। त ऊहो बाजार करे आइल रहें त कविता सुनें आ गइलें। हम कहनी राजकमल चौधरी से। उनका के मंच पर बोलावऽ आ ई नयी कविता पर बहस रोक दऽ थोड़ी देर। उनकरा से सुनल जाव। ऊ का कहत बाड़ें अपना कविता के बारे में। भिखारी आवत ना रहें त उनका पकड़ के ले आवल गइल। पगड़ी बँधले। हम कहनी राउर कविताई बा, नाटक बा, एपर कुछ कहीं। अद्‌भुत भाषण रहे ऊ। ओसे जीवंत भोजपुरी आज ले सुने के ना मिलल। पहिले तुलसीदास क चौपाई सुनवलें। भक्ति-भाव रहे उनका में, स्मरण कइलें। आ ओकरा बाद कहनऽ कि देखीं "हम नाचे गावे लगनीं तब हम कहनीं कि एह काम में आ छूरा में बड़ा फर्क बा। ई ज्यादा बड़ा काम बा। छूरा छोट काम बा।" आ फिर आपन एगो पंक्ति सुनवलें 'छूरा छूटल नाच के जवरीं।' नाच के कारण हमरा से छूरा गिर गइल। कला इहे करे ले। कला आ छूरा साथ ना रहे सकेला। एकर बड़ी दूर तक व्याख्या कइलन, अपना जीवंत भाषा में। ओ भाषण से हमरा ज्ञान भइल कि एह भाषा में अइसन व्यंजना संभव बा, खास तौर से नाटक में। उनकर 'बिदेसिया' बहुत प्रसिद्ध हऽ, लेकिन जवन महान नाटक ह ऊ ह 'बेटी बेचवा'। ओकर कहानी बहुत लंबी बा। ओमे हम ना जाइब। बाकी अद्‌भुत रूपक क प्रयोग भइल बा। सटायर लिखे के क्षमता भिखारी ठाकुर में रहे जवन ऊ नाटक में लिखले बाड़न। ई छिटपुट प्रयास रचना के माध्यम से ऊ कइलन। बहुत लोकप्रिय रचनाकार रहन। बाकी उनके रचना के मूल्यांकन आज तक ठीक से ना भइल। भोजपुरी आलोचना के कवनो ठीक-ठीक परंपरा आज ले ना बनल। भोजपुरी आलोचना के विकास ना भइल। एगो रहनऽ ठाकुर प्रसाद सिंह। रउवा सभे जानत होब। भोजपुरी भाषी रहेलें। हिंदी में काम करते रहलें। ऊ कहत रहलें कि भोजपुरी कविता अजुओ 'वेदर रिपोर्ट' बिया। फागुन आ गइल, चैत आ गइल, बसंत आ गइल, बरखा आ गइल, ओकर गीत लिखाए लगी भोजपुरी में। भोजपुरी कविता के 'वेदर रिपोर्ट' से आगे जाय के चाही।

ए बीचे कुछ काम भोजपुरी में भइल बाटे। थोड़ा बहुत हमहू देखले बानी। कुछ नया प्रयास हो रहल बाड़े स। एगो रचनाकार बनारस के हउवे, प्रकाश उदय। आ प्रकाश उदय काम कइले बाड़न। उनका लेखन में कविता में एगो नया प्रयास देखे के मिलेला।

उनका कउनो संग्रह आइल बा कि ना हमके पता नइखे। बाकी ऊ काम कर रहल बाड़न। अइसन प्रयास के जरूरत बा। जे.एन.यू. में एगो कविता गोष्ठी भइल रहे। ओमे हमार एगो छात्र, ओकर नाम भुलात बाड़ी, ऊ आपन कविता भोजपुरी में सुनवले रहे। हिंदी के बड़का कवि लोग उहाँ बइठल रहे, लेकन ऊ छा गइल।

भोजपुरी केतना अनुवाद-सक्षम भाषा ह एकर विचार नइखे भइल। एगो रहलें हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'। उनके बहुत लोग ना जानत होइहें। उनके अवधेश (अवधेश प्रधान) जानत होइहें। हवलदार त्रिपाठी बिहार के रहे वाला रहलें। बहुत किताब लिखलें। अद्‌भुत काम भोजपुरी में कइलें। 'मेघदूत' के कई अनुवाद भइल, लेकिन ओसे अच्छा अनुवाद हिंदी क्षेत्र में आज तक भइल नइखे। ऊ विलक्षण बा। भोजपुरी में रहे ओसे ओकर ओतना प्रचार ना हो पवलस। एगो अउर बात बा। रवीन्द्रनाथ के खूब अनुवाद भइल, खास करके 'गीतांजलि' के। 'गीतांजलि' के अट्ठारह गो अनुवाद हम देखलें रहनी एक समय, अब बढ़ियो गइल होई। कवनो अच्छा नइखे। 'गीतांजलि' के हिंदी में अबहिन ले अच्छा अनुवाद नइखे आइल। ओसहूँ कविता के अनुवाद मुश्किल होला। लेकिन ई भोजपुरी भाषा के कमाल ह। एगो कलकत्ता में रहलन बचनलाल श्रीवास्तव। हिंदी पढ़ावत रहलन। ऊ 'गीतांजलि' के अनुवाद कइले भोजपुरी में। ऊ विलक्षण अनुवाद बा। ओसे अच्छा अनुवाद आज ले ना भइल त हमरा समझ में ई आइल बा कि भोजपुरी भाषा का जवन अंतर्निहित संगीत बा ऊ बंगला के नजदीक बा, एसे उनके आसानी भइल होई। हिंदी खड़ी बोली में ऊ बात नइखे।

बहरहाल, कइगो प्रयास भोजपुरी में हो रहल बा, कई स्तर पर। एगो बात बा जवने पर भोजपुरी ज्यादा सजग नइखे, अ ऊ बा गद्य के निर्माण। ई शायद आधुनिक साहित्य में प्रवेश क पहिला चरण बा। हमरे इहाँ भारतेंदु युग में सबसे ज्यादा गद्य लिखल गइल। कविता कम, गद्य ज्यादा। भोजपुरी में गद्य के तरफ ध्यान कम गइल। हम भोजपुरी सम्मेलन में जाईला त कहीला कि कुछ दिन कविता बंद कऽदऽ जा आ गद्य लिखऽ जा। गद्य लिखाई त ओमे आधुनिक चेतना ज्यादा आ पाई। गद्य के विकास ना होई त कविता के विकास ना होई। गद्य अउर काव्य समानांतर चले के चाही। अइसन होखे कि एक तरफ महान गद्यकार प्रेमचंद, दूसरी तरफ जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत कविता लिखत रहलें। ई दूनो साथ-साथ चलत रहे। ई दू गो पहिया बा साहित्य क जवन साथ-साथ चले के चाही। भोजपुरी में काफी कुछ लिखल जात बा, आ ओमे अबहिन 'वेदर रिपोर्ट' के असर बा 'कुछ-कुछ'। बाकी गद्य अबहिन कम बा। जब तक ई ना होई तक तब पूरा विकास ना होई भोजपुरी क। आप सबके बहुत-बहुत धन्यवाद कि हमार भोजपुरी सुनलीं। भोजपुरी जिंदाबाद!

लिप्यंतरण एवं प्रस्तुति : बृजराज सिंह
(साभार : भोजपुरी जनपद)

भारत Vs ऑस्ट्रेलिया
दूसरा टेस्ट आज से सुबह 9:30 बजे से स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क पर
▸p10

NBT
नवभारत टाइम्स

अमीर बनाने वाला जादू छोटे व्यापारियों पर क्यों नहीं: राहुल
▸p10

महानगर › मुंबई › शुक्रवार, 17 फरवरी 2023 › माघ 28 शक संवत 1944 फाल्गुन कृष्ण द्वादशी विक्रम संवत 2079 www.navbharatgold.com वर्ष 73, संख्या 186 › मूल्य 6.00 रु. › पेज 12 › आर. एन. आई. पंजीयन नंबर 1613/57 www.nbt.in

आखिर कब पूरा होई 20 करोड़ भोजपुरियन के आस?

—अजीत दुबे

हाल फिलहाल में चार गो खबर खूबे चर्चा में रहल :

1. नेपाल के नवनिर्वाचित संसद में भोजपुरी भाषी सांसद लोग आपन मातृभाषा भोजपुरी में शपथ लिहलें।
2. एह साल से देश के सबसे बड़ स्पोर्ट इवेंट आईपीएल में भोजपुरी भाषा में भी कामंटेरी प्रसारित होई।
3. सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के इ ब्यान कि सुप्रीम कोर्ट के फैसला के क्षेत्रीय भाषा में भी अनुवाद के जरूरत बा।
4. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा ट्वीट कर न्यायपालिका के उपरोक्त पहल के सराहना कईल गईल।

एह साल प्रवासी भारतीय दिवस के आयोजन इंदौर में भइल। एह में सूरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिका प्रसाद संतोखी कहलन कि माई आ मातृभूमि स्वर्ग से बढ़के होली। सूरीनाम के आम भाषा में से एक 'सरनामी' भोजपुरी के ही एगो बोली हऽ।

एह चारो खबर के चर्चा अकारण नइखे। इ खबर एगो बानगी बा—भोजपुरी के विस्तार, दायरा आ क्षेत्राीय भाषा के ताकत, क्षमता बतावे खातिर।

ऐसी बानी बोलिए
भोजपुरी

भोजपुरी भाषा के इतिहास 1300 साल से भी पुरान बा। इ 16 देश में फइलल बिया। देश-विदेश में 20 करोड़ से भी ज्यादा लोगन एकरा के बोलेलन। भारत में हिंदी के बाद दूसर सबसे बड़ भाषा बिया। विदेश के दू गो देश—मॉरीशस आ नेपाल में भोजपुरी के मान्यता भी मिल चुकल बा,बावजूद एकर भोजपुरी अपना मूल देश भारत में संवैधानिक मान्यता से आजो वंचित बा।

भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता के सवाल कई बरस से लंबित बा। संसद में 1969 से माँग उठत बा। 1969 में चौथी लोकसभा में सांसद श्री भोगेंद्र झा, प्राइवेट मेंबर बिल के रूप में एह सवाल के पहिला बेर संसद में उठवलन। 1969 से लिहले आज तक संसद में भोजपुरी की संवैधानिक मान्यता पर 20 बेर निजी विधेयक पेश भइल बा। एकरा अलावे कई बार स्पेशल मेंशन एवं ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के जरिए आ अनेक बेर शून्यकाल के दौरान भी एह मुद्दा के संसद में उठावल गइल बा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एही साल 26 जनवरी से पूरे देश में लागू भइल हऽ। एह में मातृभाषा में पठन-पाठन पऽ जोर दिहल गइल बा। बाकिर ओकर

क्रियान्वयन खातिर कवनो साफ-सोझ ब्लू प्रिंट नइखे। देश में आजादी के अमृत काल मनावल जा रहल बा। आगे आवेवाला 25 साल देश आ 130 करोड़ की आबादी खातिर बेहद खास होखेवाला बा। अमृत काल के 'पंच प्रण' में 'विकसित भारत', 'गुलामी से मुक्ति', 'विरासत पर गर्व', 'एकता आ एकजुटता' आ 'नागरिकन के कर्तव्य' शामिल बा।

अमृत काल में देश में एक राष्ट्रीय भाषा नीति के भी जरूरत बा। आजादी के सात दशक बाद भी हमनी आपन भाषा नीति नइखी बनवले। अमृत काल में देश के कुल्ह भसवन के सम्मान आ उनकर हक मिले, एह दिशा में सरकार के पहल करे के दरकार बा।

जापान, रूस, चीन, जर्मनी, फ्रांस जइसन देश आपन भाषा में उच्च शिक्षा दिहले के चलते विकसित बाड़ें। तेजी से विज्ञान और तकनीक में प्रगति कर रहल बाड़ें। कई गो वैज्ञानिक शोधन में साबित भइल बा कि मातृभाषा में पढ़ले से बचवन के बुद्धि का सबसे बेहतर विकास होखेला। यूनेस्को के रिपोर्ट भी एकर तस्दीक करत बा।

केंद्र सरकार भारतीय भाषा के प्रोत्साहित करे खातिर कईगो योजना आ मुहिम चला रहल बिया। इंजीनियरिंग आ चिकित्सा जइसन विषय के मातृभाषा में पढ़े के विकल्प दिहल अइसने पहल के नतीजा हऽ। बाकिर एकर एगो दुखद पक्ष इहो बा कि आजादी के सात दशक बाद भी भोजपुरीभाषी आपन मातृभाषा में शिक्षा पावे के अधिकार से वंचित बाड़ें। कारण, उनकर मातृभाषा के संवैधानिक मान्यता नइखे मिलल। साहित्य अकादेमी पुरस्कार से लेके राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जइसन कई जगह भोजपुरी आठवीं अनुसूची में शामिल ना होखे के वजह से वंचित बिया। अइसना में केंद्र सरकार अगर भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता देत बिया, तऽ इ 20 करोड़ से अधिक भोजपुरी-भाषियन के सपना आ आस के पूरा करी।

(दिल्ली सरकार के मैथिली भोजपुरी अकादमी के उपाध्यक्ष रहल लेखक विश्व भोजपुरी सम्मेलन संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष हउवन।)

Since 1994

SUGANDH®

TEA GROUP

From garden to your cup!

पियो सुगन्ध,
रहो बुलंद...

We offer Blended & Single Estate CTC, Green, White, Oolong, Flavored and Instant Tea as well as Vending Machines

SUGANDH TEA PVT. LTD.

113, D-Mall, Netaji Subhash Place, Pitampura, Delhi-110034, Phone: +91-11-27839069/70

Shop online: www.sugandhtea.com Stay Updated - | /sugandhtea

विश्व भोजपुरी सम्मेलन

विश्व भोजपुरी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारी एवं सम्मानित सदस्यों का दिल्ली ईकाई की ओर से हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामना!

विनयमणि त्रिपाठी
अध्यक्ष
(दिल्ली इकाई)

मनीष चौधरी
महासचिव
(दिल्ली इकाई)

Designed and Printed at
इंडिका इन्फोमीडिया
नई दिल्ली